

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### किताब पढने की दुआ

अज: शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, हजरते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अत्तार कादिरि र-जवी دامت بركاتهم العاليه

दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ

लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह! हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी

रहमत नाज़िल फ़रमा ! ओ अ-ज़मत और बुसुर्गी वाले ! (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुइइ शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गभे मदीना

व बकीअ

व मज्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428



## आका का महीना

येह रिसाला (आका का महीना)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी हजरत

अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईलयास अत्तार कादिरि र-जवी जियाई

دامت بركاتهم العاليه ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल

पत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाअेअ करवाया

है. ईस में अगर किसी जगह कभी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को (ब

जरीअअे मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाईये.

**राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)**

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# آका का मदीना

शैतान लाभ सुस्ती दिलाये येह बयान (32 सफ़हात)  
मुकम्मल पढ लीजिये عَلَيْهِ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ رोजों और एबादते  
एलाही के जजबे से मालामाल हो जायेंगे.

## आशिके दुरदो सलाम का मकाम

हजरते सय्यिदुना शैब अबू बक़ शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ओक  
रोज बगदादे मुअल्ला के जय्यिद आलिम हजरते सय्यिदुना अबू बक़  
बिन मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد के पास तशरीफ़ लाये, उन्हीं ने झौरन पडे  
हो कर उन को गले लगा लिया और पेशानी यूम कर बडी ता'जीम के  
साथ अपने पास बिठाया. छाजिरीन ने अर्ज किया : या सय्यिदी ! आप  
और अहले बगदाद आज तक एन्हें दीवाना कहते रहे हैं मगर आज  
एन की एस कदर ता'जीम क्यूं ? जवाब दिया : मैं ने यूं ही औसा नही  
किया, أَلْحَمْدُ لِلَّهِ आज रात मैं ने प्वाब में येह एमान अफ़रोज मन्जर  
देभा, के हजरते सय्यिदुना अबू बक़ शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي बारगाहे  
لَدَيْهِ

1 : येह बयान अभीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَةِ ने तप्लीगे कुरआनो सुन्नत की  
आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज हैजाने  
मदीना बाबुल मदीना करायी में होने वाले हफ़तावार सुन्नतों बरे एजतिमाअ (26  
र-जबुल मुरजजब 1431 सि.हि./8-7-10) में इरमाया था. तरमीम व एजाफ़े के साथ  
तहरीरन छाजिरे बिदमत है.  
-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَفْضِلًا﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रकमते नाजिल फरमाता है. (مسلم)

रिसालत में हाजिर हुअे तो सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अरे हो कर उन को सीने से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे कर अपने पडलू में बिठा लिया. मैं ने अर्ज की : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! शिबली पर इस कदर शफकत की वजह ? अल्लाह के एउुजल्ल के मलबूब, दानाअे गुयूब, मुनज्जलुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (गौब की ખबर देते हुअे) फरमाया के येह हर नमाज के आ'द येह आयत पढता है: لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾ (التوبة ١٢٨) और इस के आ'द मुज पर दुर्रद पढता है. (القول البديع ص ٣٤٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

आका का महीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का शा'बानुल मुअज्जम के बारे में फरमाने मुकर्रम है : شَعْبَانَ شَهْرِيَّ وَرَمَضَانَ شَهْرُ اللَّهِ - या'नी शा'बान मेरा महीना है और र-मजान अल्लाह का महीना है.

(الجامع الصغير للسيوطي ص ٣٠١ حديث ٤٨٨٩)

शा'बान के पांय दुर्र की बहारें

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! माहे शा'बानुल मुअज्जम की अ-ज-मतों पर कुरबान ! इस की इज्जलत के लिये एतना ही काफ़ी है के हमारे भीठे भीठे आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एसे "मेरा महीना" फरमाया. सरकारे गौसे आ'जम शौष अब्दुल कादिर जलानी हम्बली के "ش،ع،ب،ان" के पांय दुर्र के "शा'बान" के पांय दुर्र के : عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِيِّ

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुर्रुदे पाक न पड़े. (त्रुमन्दी)

मु-तअद्लिक नकल इरमाते हैं : ش से मुराद “शरफ़” या’नी बुजुर्गी, ع से मुराद “उलुव्व” या’नी बुलन्दी, ب से मुराद “बिर” या’नी अहसान, “پ” से मुराद “उल्फ़त” और ن से मुराद “नूर” है तो येह तमाम यीजें अल्लाह तआला अपने बन्दों को इस महीने में अता इरमाता है, येह वोह महीना है जिस में नेकियों के दरवाजे खोल दिये जाते हैं, अ-र-कतों का नुजूल होता है, ખतामें मिटा दी जाती हैं और गुनाहों का कफ़ारा अदा किया जाता है, और ખैरुल बरिय्यह, सय्यिदुल वरा जनाबे मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुर्रुदे पाक की कसरत की जाती है और येह नबिय्ये मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुर्रुद भेजने का महीना है.

(غُنْبَةُ الطَّالِبِينَ ج ۱ ص ۳۴۱-۳۴۲)

### सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ का जज्ज्

उज्जरते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं :

“शा’बान का यांद नज्ज आते ही सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ तिलावते कुरआने पाक की तरफ़ खूब मु-तवज्जह हो जाते, अपने अम्वाल की जक़ात निकालते ताके गु-रबा व मसाकीन मुसल्मान माहे र-मजान के रोजों के लिये तय्यारी कर सकें, हुक्काम कैदियों को तलब कर के जिस पर “हद” (या’नी शर-ई सजा) ज़री करना होती उस पर हद काईम करते, बकिय्या में से जिन को मुनासिब होता उन्हें आजाद कर देते, ताजिर अपने कर्जे अदा कर देते, दूसरों से अपने कर्जे वुसूल कर लेते. (यू माहे र-मजानुल मुबारक से कब्ल ही अपने आप को इरिग कर लेते) और र-मजान शरीफ़ का यांद नज्ज आते ही गुस्ल कर के (बा’ज उज्जरात) अे’तिकाइ में बैठ जाते.”

(ايضاً ص ۳۴۱)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર દસ મરતબા દુરૂદ પાક પઢે અલ્લાહ ﷻ ઉસ પર સો રહમતે નાઝિલ ફરમાતા હૈ. (طبرانی)

## મોજૂદા મુસલમાનોં કા જઝબા

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! પહલે કે મુસલમાનોં કો ઈબાદત કા કિસ કદર ઝોક હોતા થા ! મગર અફસોસ ! આજ કલ કે મુસલમાનોં કો ઝિયાદા તર હુસૂલે માલ હી કા શોક હૈ. પહલે કે મ-દની સોચ રખને વાલે મુસલમાન મુ-તબરક અય્યામ (યા'ની બ-ર-કત વાલે દિનોં) મેં રબ્બુલ અનામ ﷻ કી ઝિયાદા સે ઝિયાદા ઈબાદત કર કે ઉસ કા કુર્બ હાસિલ કરને કી કોશિશેં કરતે થે ઓર આજ કલ કે મુસલમાન, મુબારક દિનોં, ખુસૂસન માહે ર-મઝાનુલ મુબારક મેં દુન્યા કી ઝલીલ દૌલત કમાને કી નઈ નઈ તરકીબેં સોચતે હેં. અલ્લાહ ﷻ અપને બન્દોં પર મેહરબાન હો કર નેકિયોં કા અજરો સવાબ ખૂબ બઢા દેતા હૈ, લેકિન દુન્યા કી દૌલત સે મહબ્બત કરને વાલે લોગ ર-મઝાનુલ મુબારક મેં અપની ચીજોં કા ભાવ બઢા કર ગરીબ મુસલમાનોં કી પરેશાનિયોં મેં ઈઝાફા કર દેતે હેં. સદ કરોડ અફસોસ ! ખૈર ખ્વાહિયે મુસ્લિમીન કા જઝબા દમ તોડતા નઝર આ રહા હૈ !

એ ખાસએ ખાસાને રુસુલ વક્તે દુઆ હૈ ઉમ્મત પે તેરી આ કે અજબ વક્ત પડા હૈ  
જો દીન બડી શાન સે નિકલા થા વતન સે પરદેસ મેં વોહ આજ ગરીબુલ ગુ-રબા હૈ

ફરિયાદ હૈ એ કશિતયે ઉમ્મત કે નિગહબાં

બેડા યેહ તબાહી કે કરીબ આન લગા હૈ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

## નફલ રોઝોં કા પસન્દીદા મહીના

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! હમારે દિલોં કે ચૈન, સરવરે કૌનૈન

مَا هَذَا شَأْنًا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ إِنَّكَ تَعَالَى عَلَيَّ وَاللَّهُ سَلَّمَ માહે શા'બાન મેં કસરત સે રોઝે રખના પસન્દ ફરમાતે. યુનાન્યે હઝરતે સચિદુના અબ્દુલ્લાહ બિન અબી કેસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે

ફરમાને મુસ્તકા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक डुवा और उस ने मुज पर दुरदे पाक न पढा तडकीक वोड भद भप्त हो गया. (ابن سنی)

મરવી હે કે ઉન્હોં ને ઉમ્મુલ મુઅમિનીન સચ્ચિ-દતુના આઈશા સિદ્દીકા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को ફરમાते सुना : अम्बिया के सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पसन्दीदा महीना शा'बानुल मुअज्जम था, के इस में रोजे रखा करते फिर इसे र-मजानुल मुबारक से मिला देते.

(سُنَنِ ابوداؤد ج ٢ ص ٤٧٦ حديث ٢٤٣١)

## लोग इस से गाड़िल हैं

હજરતે સચ્ચિદુના ઉસામા બિન ઝૈદ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાते हैं : मैं ने अर्ज की : या रसूलदलाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं देखता हूँ के जिस तरह आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ शा'बान में रोजे रખते हैं इस तरह किसी भी महीने में नहीं रખते ? फरमाया : रजब और र-मजान के भीय में येह महीना है, लोग इस से गाड़िल हैं, इस में लोगों के आ'माल अद्लाहु रब्बुल आ-लमीन عَزَّوَجَلَّ की तरफ उठाये जाते हैं और मुझे येह मडबूष है के मेरा अमल इस डाल में उठाया जाये के मैं रोजादार हूँ. (سُنَنِ نَسَائِي ص ٣٨٧ حديث ٢٣٥٤)

## मरने वालों की ફેहरिस બનાને का महीना

હજરતે સચ્ચિ-દતુના આઈશા સિદ્દીકા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ફરમાती हैं : ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पूरे शा'बान के रोजे रखा करते थे. फरमाती हैं के मैं ने अर्ज की : या रसूलदलाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ! क्या सब महीनों में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के नजदीक जियादा पसन्दीदा शा'बान के रोजे रખना है ? तो मडबूषे रब्बुल इबाद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने ईशार्द फरमाया : अद्लाह عَزَّوَجَلَّ इस साल मरने वाली हर जान को लिख देता है और मुझे येह पसन्द है के मेरा वक्ते रुफ्सत आये और मैं रोजादार हूँ.

(مُسْنَدُ أَبِي يَفْلَى ج ٤ ص ٢٧٧ حديث ٤٨٩٠)

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरुदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी. (مجمع الزوائد)

## आका शा'बान के अक्सर रोजे रખते थे

बुभारी शरीफ में है : उजरते सय्यि-दतुना आ'ईशा सिदीका बुभारी शरीफ में है : उजरते सय्यि-दतुना आ'ईशा सिदीका शा'बान से क्रियादा किसी महीने में रोजे न रखा करते बल्के पूरे शा'बान ही के रोजे रख लिया करते थे और इरमाया करते : अपनी इस्तिताअत के मुताबिक अमल करो, के अल्लाह उर्रुऊँ उस वक्त तक अपना इर्रुऊँ नहीँ रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ. (صحيح بخاری ج ۱ ص ۶۴۸ حدیث ۱۹۷۰)

## हदीसे पाक की शर्ह

शारेहे बुभारी उजरते अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद शरीफुल उक अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْمِي इस हदीसे पाक के तह्त लिखते हैं : मुराद येह है के शा'बान में अक्सर दिनों में रोजा रખते थे इसे तग्लीबन (या'नी ग-लबे और क्रियादत के लिहाज से) कुल (या'नी सारे महीने के रोजे रखने) से ता'बीर कर दिया. जैसे कहते हैं : “कुलां ने पूरी रात इबादत की” जब के उस ने रात में जाना भी जाया हो और ज़रूरियात से इरागत भी की हो, यहां तग्लीबन अक्सर को “कुल” कह दिया. मजीद इरमाते हैं : इस हदीस से मा'लूम हुवा के शा'बान में जिसे कुव्वत हो वोह क्रियादा से क्रियादा रोजे रखे. अलबत्ता जो कमजोर हो वोह रोजा न रखे क्यूंके इस से र-मजान के रोजों पर असर पड़ेगा, येही मद्मल (या'नी मुराद व मकसद) है उन अहादीस का जिन में इरमाया गया के निरूफ (या'नी आधे) शा'बान के आ'द रोजा न रखो. (ترجمه القاری ج ۳ ص ۳۷۷، ۳۸۰) [ترمذی حدیث ۷۳۸]

## दा'वते इस्लामी में रोजों की बहारे

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल महीना की

करमाने मुस्तक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढा उस ने शक़ा की. (عبدالرزاق)

मत्बूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “इंज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल)” सफ़हा 1379 पर है : हुज्जतुल ईस्लाम हज़रते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي इरमाते हैं : मजक़ूरा हदीसे पाक में पूरे माहे शा’बानुल मुअज़्ज़म के रोज़ों से मुराद अक्सर शा’बानुल मुअज़्ज़म (या’नी महीने के आधे से ज़ियादा दिनो) के रोजे हैं. (مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص ३०३) अगर कोई पूरे शा’बानुल मुअज़्ज़म के रोजे रचना चाहे तो उस को मुमा-न-अत भी नहीं. أَلْحَدِّدُ لِلَّهِ عَلَيْهِ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा’वते ईस्लामी के कई ईस्लामी भाई और ईस्लामी बहनों में र-जबुल मुरज्जब और शा’बानुल मुअज़्ज़म दोनों महीनों में रोजे रचने की तरकीब होती है और मुसल्लसल रोजे रचते हुअे येह हज़रात र-मजानुल मुबारक से मिल जाते हैं.

## शा’बान के अक्सर रोजे रचना सुन्नत है

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आईशा सिदीका रिवायत इरमाती हैं : हुज़ूरे अकरम, नुरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को मैं ने शा’बान से ज़ियादा किसी महीने में रोज़ा रचते न देखा. आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सिवाअे यन्द् दिन के पूरे ही माह के रोजे रचा करते थे. (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٢ ص ١٨٢ حَدِيث ٧٣٦)

तेरी सुन्नतों पे यल कर मेरी इह जब निकल कर

यले तू गले लगाना म-दनी महीने वाले

(वसाईले बफ़्शिश (मुरम्म), स. 428)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढेगा में कियामत के दिन उस की शफाअत करेगा. (جمع الجوامع)

## भलाघयों वाली रातें

उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-दतुना आ'शशा सिदीका इरमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रउिकुर'हीम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को इरमाते सुना : **अद्लाह अज़ज़ल** (भास तौर पर) यार रातों में भलाघयों के दरवाजे भोल देता है : **﴿1﴾** अकर एद की रात **﴿2﴾** एदुल क़ित्र की (यांद्) रात **﴿3﴾** शा'बान की पन्दरहवीं रात, के एस रात में मरने वालों के नाम और लोगों का रिज़क और (एस साल) उज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं **﴿4﴾** अ-रके की (या'नी 8 और 9 जुल डिज्जल की दरमियानी) रात अज़ाने (इज्ज) तक.

(تفسير رَدِّ مَنْشُور ج ٧ ص ٤٠٢)

## नाजुक हैसले

भीठे भीठे एस्लामी भा'एयो ! पन्दरह शा'बानुल मुअज़्जम की रात कितनी नाजुक है ! न जाने किस की क़िस्मत में क्या लिख दिया जाये ! बा'ज अवकात बन्दा गइलत में पडा रह जाता है और उस के बारे में कुदु का कुदु डो युका डोता है. "गुन्यतुनालिबीन" में है : बहुत से कइन धुल कर तय्यार रभे डोते हैं मगर कइन पहनने वाले बाजारों में घूम फिर रहे डोते हैं, काई लोग ऐसे डोते हैं के उन की कभ्रें भोदी जा युकी डोती हैं मगर उन में दइन डोने वाले भुशियों में मस्त डोते हैं, बा'ज लोग हंस रहे डोते हैं डालां के उन की मौत का वक्त करीब आ युका डोता है. कइ मकानात की ता'भीरात का काम पूरा डो गया डोता है मगर साथ ही उन के मालिकान की जिन्दगी का वक्त भी पूरा डो युका डोता है.

(عُنَيْتَةُ الطَّالِبِينَ ج ١ ص ٣٤٨)

आगाह अपनी मौत से को'ए बशर नहीं

सामान सो बरस का है पल की भबर नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया. (طبرانی)

## देरों गुनाहगारों की मग्फिरत होती है मगर...

हजरते सय्यिदुना आ'ईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है, हुजूर सरापा नूर, हैज गन्जूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : मेरे पास जिब्रि'एल (عَلَيْهِ السَّلَام) आये और कहा : शा'बान की पन्दरहवीं रात है, इस में अल्लाह तआला जहन्नम से इतनों को आजाद इरमाता है जितने बनी कलम की बकरियों के बाल हैं मगर काफिर और अदावत वाले और रिश्ता काटने वाले और कपडा लटकाने वाले और वालिदैन की ना इरमानी करने वाले और शराब के आदी की तरफ नजरे रहमत नहीं इरमाता. (شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٢٨٤ حديث ٢٨٢٧) (हदीसे पाक में "कपडा लटकाने वाले" का जो बयान है, इस से मुराद वोह लोग हैं जो तकब्बुर के साथ टप्नों के नीचे तहबन्द या पाजमा या सौब या'नी लम्बा कुरता वगैरा लटकाते हैं) करोड़ों हम्बलियों के अजीम पेशवा हजरते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से जो रिवायत नकल की उस में कातिल का भी जिक्र है.

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَد ج ٢ ص ٥٨٩ حديث ١٦٦٠٣)

हजरते सय्यिदुना कसीर बिन मुर्रह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के ताजदारे रिसालत, सरापा रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब में तमाम जमीन वालों को बप्श देता है सिवाये मुशरिक और अदावत वाले के.

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٢٨١ حديث ٢٨٣٠)

## हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ

अमीरुल मुअमिनीन हजरते मौला मुशिकल कुशा, सय्यिदुना अलियुल मुर्तजा शेरे पुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ शा'बानुल मुअज्जम की

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइटे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाँस है. (ابو يعلى)

पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत में अक्सर बाहर तशरीफ़ लाते. अेक बार ँसी तरह शबे बराअत में बाहर तशरीफ़ लाअे और आस्मान की तरफ़ नजर उठा कर इरमाया : अेक मर्तबा अल्लाह तआला के नबी उतरते सय्यिदुना दावूद عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने शा'बान की पन्दरहवीं रात आस्मान की तरफ़ निगाह उठाई और इरमाया : येह वोह वक्त है के ँस वक्त में जिस शप्स ने जो ली दुआ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मांगी उस की दुआ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कबूल इरमाई और जिस ने मग़ि़रत तलब की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़ि़रत इरमा दी बशर्ते के दुआ करने वाला उश्शार (या'नी जुल्मन टेक्स लेने वाला), जादूगर, काहिन और बाजा बजाने वाला न हो, इर येह दुआ की : **اللَّهُمَّ رَبَّ دَاوُدَ اغْفِرْ لِمَنْ دَعَاكَ فِيهَا** - **اللَّهُمَّ رَبَّ دَاوُدَ اغْفِرْ لِمَنْ دَعَاكَ فِيهَا** - अै दावूद के परवर दगार ! जो ँस रात में तुज से दुआ करे या मग़ि़रत तलब करे तू उस को अप्श दे. (لطائف التعارف لابن رجب الحنبلي ج ١ ص ١٣٧ باختصار)

उर अता तू दर गुजर कर बे कसो मजबूर की

हो ँलाडी ! मग़ि़रत उर बे कसो मजबूर की

(वसाँले बज्शिश (मुरम्म), स. 96)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## मह़म लोग

भीठे भीठे ँस्वामी ल्माँयो ! शबे बराअत बेहद अहम रात है, किसी सूरत से ली ँसे गइलत में न गुजारा जाअे, ँस रात रहमतों की पूब बरसात होती है. ँस मुबारक शब में अल्लाह तआ-र-क व तआला “अनी कलब” की बकरियों के बालों से ली ज़ियादा लोगों को

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَكْفًا﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोड़ मुज पर दुइद शरीक न पढे तो वोड़ लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

जहन्नम से आजाद इरमाता है. किताबों में लिखा है : “कबीलअे बनी कलब” कबाईले अरब में सब से जियादा बकरियां पालता था.<sup>1</sup> आह ! कुछ बढ नसीब ऐसे ली हैं जिन पर शबे बराअत या’नी छुटकारा पाने की रात ली न बप्शे जाने की वईद है. उजरते सय्यिदुना ईमाम बैहकी शाइई ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَوْنِي “इजाईलुल अवकात” में नकल करते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजरसम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईब्रत निशान है : छ<sup>6</sup> आदमियों की ईस रात ली बप्शिश नईी डोगी : ﴿1﴾ शराब का आदी ﴿2﴾ मां बाप का ना इरमान ﴿3﴾ जिना का आदी ﴿4﴾ कन्वे तअल्लुक करने वाला ﴿5﴾ तस्वीर बनाने वाला और ﴿6﴾ युगल पोर. (فضائل الأوقات ج ١ ص ١٣٠ حدیث ٢٧)

ईसी तरह काहिन, जहदूगर, तकब्बुर के साथ पाजामा या तहबन्द टप्नों के नीचे लटकाने वाले और किसी मुसल्मान से बिला ईजाजते शर-ई बुग्जो कीना रपने वाले पर ली ईस रात मगिरेत की सआदत से महइमी की वईद है, युनाच्चे तमाम मुसल्मानों को याहिये के मु-तजकरा (या’नी बयान कदा) गुनाहों में से अगर مَعَادُ اللهِ किसी गुनाह में मुलव्स हों तो वोड़ बिल फुसूस उस गुनाह से और बिल उमूम हर गुनाह से शबे बराअत के आने से पडले बडके आज और अली सय्यी तौबा कर लें, और अगर बन्दों की हक त-लइियां की हैं तो तौबा के साथ साथ उन की मुआई तलाई की तरकीब इरमा लें.

**इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का पयाम**

**तमाम मुसल्मानों के नाम**

मेरे आका आ’ला उजरत, ईमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने’मत,

له دینہ

ل:مرقاة ج ٣ ص ٣٧٥

करमाने मुस्तफ़ा. عَلَّمَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْنَا هَذَا وَمَنْعَهُ مِنَّا بِرَحْمَتِهِ الْعَظِيمَةِ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो, के तुम्हारा दुरद मुज तक पछोयता है. (طبرانی)

अजीमुल ब-र-कत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्मे रिसालत, मुजद्विदे दीनो मिल्लत, डामिये सुन्नत, माडिये बिद्अत, पीरे तरीकत, बाईसे भैरो ब-र-कत, उ-नई मजलब के अजीम आलिम व मुफ़्ती हजरते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज अल कारी शाह ईमाम अहमद रजा भान عَلَيَّهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अपने अेक ईरादत मन्द (या'नी मो'तकिद) को शबे बराअत से कब्ल तौबा और मुआफ़ी तलाफ़ी के तअल्लुक से अेक मकतूब शरीफ़ ईरसाल इरमाया जे के उस की ईफ़ादियत के पेशे नजर हाजिरे बिदमत है युनान्हे “कुल्लियाते मकतीबे रजा” जिल्द अव्वल सफ़हा 356 ता 357 पर है : शबे बराअत करीब है, ईस रात तमाम बन्दों के आ'माल हजरते ईज़्जत में पेश होते हैं. मौला عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेअे यौमुन्नुशूर عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ मुसल्मानों के जुनूब (या'नी गुनाह) मुआफ़ इरमाता है मगर यन्द उन में वोह दो मुसल्मान जे बाहम हुन्वी वजह से रन्जिश रभते हैं, इरमाता है : “ईन को रहने दो, जब तक आपस में सुल्ल न कर लें.” लिहाजा अहले सुन्नत को याडिये के हत्तल वरअ कब्ले गुइबे आइताब 14 शा'भान बाहम अेक दूसरे से सफ़ाई कर लें, अेक दूसरे के हुकूक अदा कर दें या मुआफ़ करा लें, के बि ईज़्जिनीही तआला हुकूकुल ईबाद से सहाईफ़े आ'माल (या'नी आ'माल नामे) ખाली हो कर बारगाहे ईज़्जत में पेश हों. हुकूके मौला तआला के लिये तौबअे सादिका (या'नी सख्खी तौबा) काफ़ी है. (हदीसे पाक में है :) الْكَاتِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ (या'नी गुनाह से तौबा करने वाला अैसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं (ابن ماجه حديث 4200)) अैसी डालत में बि ईज़्जिनीही तआला उइर ईस शब में उम्मीदे मग़िइरते ताम्मा (या'नी मग़िइरत की पक्की उम्मीद) है बशर्ते सिइलते अकीदा. (या'नी अकीदा दुरुस्त होना शर्त

﴿فَرْمَانَهُ مُسْتَكْفًا﴾ صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अद्वलाह के जिक्र और नबी पर दुउद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गये तो वोह बढबुदर मुदरि से उठे. (شعب الایمان)

है) (और वोह गुनाह मिटाने वाला रहमत फ़रमाने वाला है). येह सब मुसा-ल-हते एष्वान (या'नी त्वाँयों में सुल्ह करवाना) व मुआफ़िये हुकूक़ तेऱाली बहमदेह यहाँ सालहाअे दररर (या'नी काफ़ी बरसों) से ज़री है, उम्मीद है के आप भी वहाँ के मुसल्मानों में एस का एजरा कर के **مَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهُ أَجْرُهَا وَأَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا يَنْقُصُ مِنْ أُجُورِهِمْ شَيْءٌ** (या'नी जो एस्लाम में अच्छी राह निकाले उस के लिये एस का सवाब है और कियामत तक जो एस पर अमल करें उन सब का सवाब हमेशा उस के नामअे आ'माल में लिखा जाअे बिगैर एस के, के उन के सवाबों में कुछ कमी आअे) के मिस्दाक हों और एस इकीर के लिये अइवो आइय्यते दारैन की दुआ फ़रमाअें. इकीर आप के लिये दुआ करता है और करेगा. सब मुसल्मानों को समजा दिया जाअे के वहाँ (या'नी बारगाहे एलाही में) न ખाली ज़बान देખी जाती है न निफ़ाक पसन्द है, सुल्ह व मुआफ़ी सब सख्ये दिल् से डो. वस्सलाम

इकीर अहमद रजा कादिरि **عَنْهُ** अज : बरेली

### पन्दरह शा'बान का रोज़ा

हउरते सख्येदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे षुदा **كَلَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** से भरवी है के नबिय्ये करीम, रउइरुईम **عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ** का फ़रमाने अजीम है : जब पन्दरह शा'बान की रात आअे तो उस में कियाम (या'नी एबादत) करो और दिन में रोज़ा रખो. बेशक अद्वलाह तआला गुउबे आइताब से आस्माने दुन्या पर षास तजद्वली फ़रमाता और कहता है : "है कोँ मुज से मग़ि़रत तलब करने वाला, के उसे बषश दूं ! है कोँ रोज़ी तलब करने वाला, के उसे रोज़ी दूं ! है कोँ मुसीबत ज़दा, के उसे आइय्यत अता करूं ! है कोँ अैसा !

ફરમાને મુસ્તકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस क दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (جمع الجوامع)

હે કોઈ ઐસા ! ઔર યેહ ઉસ વક્ત તક ફરમાતા હૈ કે ફજ તુલૂઅ હો જાએ.”

(سُنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ٢ ص ١٦٠ احديث ١٣٨٨)

## ફાએદે કી બાત

શબે બરાઅત મેં આ'માલ નામે તબ્દીલ હોતે હેં લિહાઝા મુસ્કિન હો તો 14 શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ કો ભી રોઝા રખ લિયા જાએ તાકે આ'માલ નામે કે આખિરી દિન મેં ભી રોઝા હો. 14 શા'બાન કો અસ્ર કી નમાઝ બા જમાઅત પઢ કર વહીં નફલ એ'તિકાફ કર લિયા જાએ ઔર નમાઝે મગરિબ કે ઇન્તિઝાર કી નિયત સે મસ્જિદ હી મેં ઠહરા જાએ તાકે આ'માલ નામા તબ્દીલ હોને કે આખિરી લખ્ડાત મેં મસ્જિદ કી હાઝિરી, એ'તિકાફ ઔર ઇન્તિઝારે નમાઝ વગેરા કા સવાબ લિખા જાએ. બલ્કે ઝહે નસીબ ! સારી હી રાત ઇબાદત મેં ગુઝારી જાએ.

## સબ્ઝ પરયા

અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના ઉમર બિન અબ્દુલ અઝીઝ હઝરતે એક મર્તબા શા'બાનુલ મુઅઝ્ઝમ કી પન્દરહવીં રાત યા'ની શબે બરાઅત ઇબાદત મેં મસરૂફ થે. સર ઉઠાયા તો એક “સબ્ઝ પરયા” મિલા જિસ કા નૂર આસ્માન તક ફેલા હુવા થા, ઉસ પર લિખા થા, “هَذِهِ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِكِ الْعَزِيزِ لِعَبْدِهِ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ” યા'ની ખુદાએ માલિકો ગાલિબ કી તરફ સે યેહ “જહન્નમ કી આગ સે આઝાદી કા પરવાના” હૈ જો ઉસ કે બન્દે ઉમર બિન અબ્દુલ અઝીઝ કો અતા હુવા હૈ.

(تفسير رُوح البَيَان ج ٨ ص ٤٠٢)

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ઇસ હિકાયત મેં જહાં અમીરુલ મુઅમિનીન સય્યિદુના ઉમર બિન અબ્દુલ અઝીઝ

इरमाने मुस्तक। صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरद शरीक पढे, अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा. (ابن عدی)

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की अ-उ-मतो इजीलत का इजहार है वही शबे बराअत की रिफअतो शराफत का भी जुलूर है. كَرَّمَ اللهُ وَجْهَهُ येह मुबारक शब जहन्नम की लउकती आग से बराअत (या'नी छुटकारा) पाने की रात है, इसी लिये इस रात को "शबे बराअत" कहा जाता है.

### मगरिब के बा'द ९<sup>व</sup> नवाइल

मा'भूलाते औलियाअे किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से है के मगरिब के इर्र व सुन्नत वगैरा के बा'द ९<sup>व</sup> रकअत नइल दो दो रकअत कर के अदा किये जाअें. पहली दो रकअतों से पहले येह नियत कीजिये : "या अल्लाह عُزَّوَجَلَّ ! इन दो रकअतों की ब-र-कत से मुजे दराजिये उम्र बिलभैर अता इरमा." दूसरी दो रकअतों में येह नियत इरमाइये : "या अल्लाह عُزَّوَجَلَّ ! इन दो रकअतों की ब-र-कत से बलाओं से मेरी डिफाजत इरमा." तीसरी दो रकअतों के लिये येह नियत कीजिये : "या अल्लाह عُزَّوَجَلَّ ! इन दो रकअतों की ब-र-कत से मुजे अपने सिवा किसी का मोहताज न कर." इन 6 रकअतों में सू-रतुल इतिहा के बा'द जो याहें वोह सूरतें पढ सकते हैं, याहें तो हर रकअत में सू-रतुल इतिहा के बा'द तीन तीन बार सू-रतुल इफ्वास पढ लीजिये. हर दो रकअत के बा'द इक्कीस बार قُلْ هُوَ اللهُ أَحَد (पूरी सूरत) या अेक बार सूरअे यासीन शरीफ पढिये बल्के हो सके तो दोनों ही पढ लीजिये. येह भी हो सकता है के कोई अेक इस्लामी लार्थ बुलन्ट आवाज से यासीन शरीफ पढें और दूसरे जामोशी से भूब कान लगा कर सुनें. इस में येह जयाल रहे के सुनने वाला इस दौरान जबान से यासीन शरीफ बल्के कुछ भी न पढे और येह मस्अला भूब याद रभिये के जब कुरआने करीम बुलन्ट आवाज से पढा जाअे तो



इरमाने मुस्तक। عَمَلُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के विये मङ्कित है. (ابن عساکر)

जो लोग सुनने के विये डाक़िर हैं उन पर इर्जे औन है के युपयाप भूब कान लगा कर सुनें. إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ रात शुइअ छोते ही सवाब का अम्भार लग जायेगा. हर बार यासीन शरीफ़ के बा'द “दुआये निस्के शा'बान” ली पढिये.

### दुआये निस्के शा'बानुल मुअर्रम

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 اللَّهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يَمَنُّ عَلَيْهِ ط يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ط  
 يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْإِنْعَامِ ط لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ط ظَهَرُ اللَّاجِينَ ط وَجَارُ  
 الْمُسْتَجِيرِينَ ط وَأَمَانُ الْخَائِفِينَ ط اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِي  
 عِنْدَكَ فِي أَمْرِ الْكِتَابِ شَقِيًّا أَوْ مَحْرُومًا أَوْ مَطْرُودًا أَوْ مُقْتَرًّا  
 عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ اللَّهُمَّ بِفَضْلِكَ شِقَاوَتِي وَحِرْمَانِي  
 وَطَرْدِي وَأَقْتَارَ رِزْقِي ط وَأَثْبِتْنِي عِنْدَكَ فِي أَمْرِ الْكِتَابِ  
 سَعِيدًا أَمْرًا رُوقًا مَوْفَقًا لِلْخَيْرَاتِ ط فَإِنَّكَ قُلْتَ  
 وَقَوْلِكَ الْحَقُّ فِي كِتَابِكَ الْمُنزَّلِ ط عَلَى لِسَانِ نَبِيِّكَ  
 الْمُرْسَلِ ط ﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمُنْكَرِ أَوِ الْيُسْرِ أَوِ الْيَتِيمِ﴾ ط وَعِنْدَكَ

इरमाने मुस्तक। صلى الله تعالى عليهم وسلم : जिस ने किताब में मुज पर दुर्रुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा किरिशते उस के लिये छस्तिगफार (या'नी बफिशश की दुआ) करते रहेंगे. (طبرانی)

أُمُّ الْكِتَابِ ۞ إِلَهِي بِالتَّجَلِّي الْأَعْظَمِ فِي لَيْلَةِ النَّصْفِ  
 مِنْ شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكْرَمِ ۞ الَّتِي يُفْرَقُ فِيهَا كُلُّ  
 أَمْرٍ حَكِيمٍ ۞ وَيُبْرَمُ ۞ أَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ  
 وَالْبُلُوَاءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ ۞ وَأَنْتَ بِهِ أَعْلَمُ ۞ إِنَّكَ  
 أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ ۞ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
 وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَسَلَّمَ ۞ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۞

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ अहसान करने वाले, के जिस पर अहसान नहीं किया जाता ! ऐ बडी शानो शौकत वाले ! ऐ इजलो छन्आम वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं. तू परेशान डालों का मददगार, पनाह मांगने वालों को पनाह और भौंइजदों को अमान देने वाला है. ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू अपने यहाँ उम्मुल किताब (या'नी लौहे मडइज) में मुजे शकी (या'नी बद बप्त), मडइम, धुतकारा हुवा और रिज्क में तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपने इज्जल से मेरी बद बप्ती, मडइमी, जिद्वलत और रिज्क की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुजे भुश बप्त, (कुशाद) रिज्क दिया हुवा और भलाइयों की तौफीक दिया हुवा सप्त (तहरीर) इरमा दे, के तू ने ही तेरी नाजिल की हुई किताब में तेरे ही भेजे हुअे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज्बाने कैज तरजुमान पर इरमाया और तेरा (येह) دِينَهُ

﴿فَرْمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रुद पाक पढा अल्लाह उस पर दस रकमते नाज़िल करमाता है. (مسلم)

इरमाना हक है : “तर-ज-मअे क-जुल ईमान : अल्लाह जो याहे मिटाता है और साबित करता है और अस्ल लिफा हुवा उसी के पास है.<sup>1</sup>” जुदाया عَزَّوَجَلَّ ! तजल्लिये आ'उम के वसीले से जो निस्के शा'बानुल मुकर्रम की रात (या'नी शबे बराअत) में है, के जिस में बांट दिया जाता है हर हिकमत वाला काम और अटल कर दिया जाता है. (या अल्लाह!) आइतों को हम से दूर इरमा, के जिन्हें हम जानते और नहीं भी जानते जब के तू उन्हें सब से जियादा जानने वाला है. बेशक तू सब से बढ कर अजीज और ईज्जत वाला है. अल्लाह तआला हमारे सरदार मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आल व अस्हाब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ पर दुर्रुदो सलाम भेजे. सब ખૂबियां सब जहानों के पालने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं.

### सगे मदीना عُفَى عَنْهُ की म-दनी छल्लिजामें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! सगे मदीना عُفَى عَنْهُ का सालहा साल से शबे बराअत में बयान कर्दा तरीके के मुताबिक छ<sup>6</sup> नवाइल व तिलावत वगैरा का मा'मूल है. मगरिब के बा'द की जाने वाली येह ईबादत नइल है, इर्ज व वाजिब नहीं और नमाजे मगरिब के बा'द नवाइल व तिलावत की शरीअत में कहीं मुमा-न-अत भी नहीं. उजरते अल्लामा ईब्ने रजब हम्बली عَنِ رَحْمَةِ اللهِ الْقَوِي लिफते हैं : अहले शाम में से जलीलुल कद्र ताबिईन म-सलन उजरते सय्यिहुना खालिद बिन मा'दान, उजरते सय्यिहुना मकहूल, उजरते सय्यिहुना लुक्मान बिन आभिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ वगैरा शबे बराअत की बहुत ता'जीम करते थे और ईस में खूब ईबादत बजा लाते, ईन्ही से दीगर मुसल्मानों ने ईस मुबारक रात की ता'जीम सीखी. (لطائف المعارف ج ١ ص ١٤٥)

دينه

ل: ١٣، العدد ٣٩

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَضْفًا﴾ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरेदे पाक पडे. (ترمذی)

“दुरे मुप्तार” में है : शबे बराअत में शब बेदारी (कर के ईबादत) करना मुस्तहब है, (पूरी रात जागना ही शब बेदारी नहीं) अक्सर हिस्से में जागना भी शब बेदारी है. (مُخْتَارٌ ۲ ص ۶۸-۶۷, बदरे शरीअत, जि. 1, स. 679) म-दनी ईस्तिजा : मुम्किन हो तो तमाम ईस्लामी त्माई अपनी अपनी मसाजिद में बा’दे मगरिब ७<sup>6</sup> नवाझिल वगैरा का अहतिमाम इरमाअें और देरों सवाब कमाअें. ईस्लामी बहनें अपने अपने घर में येह आ’माल बजा लाअें.

### साल भर जादू से हिंफात

दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 166 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “ईस्लामी जिन्हगी” सफ़हा 135 पर है : अगर ईस रात (या’नी शबे बराअत) सात पत्ते बेरी (या’नी बेर के दरप्त) के पानी में जोश दे कर (जब पानी नहाने के काबिल हो जाअे तो) गुस्ल करे لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ तमाम साल जादू के असर से महकूत रहेगा.

### शबे बराअत और कब्रों की फियारत

उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यि-दतुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا इरमाती हैं : मैं ने अेक रात सरवरे काअेनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को न देया तो बकीअे पाक में मुजे मिल गअे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुज से इरमाया : क्या तुम्हें ईस बात का उर था के अद्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तुम्हारी हक त-लफ़ी करेंगे ? मैं ने अर्ज की : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं ने ખयाल किया था के शायद आप अज़्वाजे मुतहूदरात में से किसी के पास तशरीफ़ ले गअे होंगे. तो इरमाया : “बेशक अद्लाह तआला शा’बान की पन्हरहवीं रात आस्माने दुन्या पर तजल्ली इरमाता है, पस कबीलअे बनी कलब की बकरियों

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْفًا﴾ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર દસ મરતબા દુરૂદે પાક પઢે અલ્લાહ ઉસ પર સો રહમતે નાઝિલ ફરમાતા હૈ. (طبرانی)

કે બાલોં સે ભી ઝિયાદા ગુનહગારોં કો બખ્શ દેતા હૈ.”

(سُنَنِ تِرْمِذِي ج ٢ ص ١٨٣ حَدِيث ٧٣٩)

## આતશ બાઝી કા મૂજિદ કૌન ?

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! الْحَبْدُ لِلَّهِ ﷻ શબે બરાઅત જહન્નમ કી આગ સે “બરાઅત” યા’ની છુટકારા પાને કી રાત હૈ, મગર સદ્ કરોડ અફસોસ ! મુસલમાનોં કી એક તા’દાદ આગ સે છુટકારા હાસિલ કરને કે બજાએ ખુદ પૈસે ખર્ચ કર કે અપને લિયે આગ યા’ની આતશ બાઝી કા સામાન ખરીદતી ઔર ખૂબ પટાખે વગૈરા છોડ કર ઈસ મુકદ્દસ રાત કા તકદુસ પામાલ કરતી હૈ. મુફરિસિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફતી અહમદ યાર ખાન عَلِيَّ بْنِ أَبِي حَسَنٍ अपनी મુખ્તસર કિતાબ “ઈસ્લામી ઝિન્દગી” મેં ફરમાતે હૈં : “ઈસ રાત કો ગુનાહ મેં ગુઝારના બડી મહરૂમી કી બાત હૈ આતશ બાઝી કે મુ-તઅલ્લિક મશહૂર યેહ હૈ કે યેહ નમરૂદ બાદશાહ ને ઈજાદ કી જબ કે ઈસ ને હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબ્રાહીમ ખલીલુલ્લાહ عَلِيَّ بْنِ أَبِي حَسَنٍ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَام કો આગ મેં ડાલા ઔર આગ ગુલઝાર હો ગઈ તો ઉસ કે આદમિયોં ને આગ કે અનાર ભર કર ઉન મેં આગ લગા કર હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબ્રાહીમ ખલીલુલ્લાહ عَلِيَّ بْنِ أَبِي حَسَنٍ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَام કી તરફ ફેંકે.”

(ઈસ્લામી ઝિન્દગી, સ. 76)

## શબે બરાઅત કી મુરવ્વજા આતશ બાઝી હરામ હૈ

અફસોસ ! શબે બરાઅત મેં “આતશ બાઝી” કી નાપાક રસ્મ અબ મુસલમાનોં કે અન્દર ઝોર પકડતી જા રહી હૈ. “ઈસ્લામી ઝિન્દગી” મેં હૈ : મુસલમાનોં કા લાખોં રુપિયા સાલાના ઈસ રસ્મ મેં બરબાદ હો જાતા હૈ ઔર હર સાલ ખબરેં આતી હૈં કે ફુલાં જગહ સે ઈતને ઘર આતશ બાઝી સે જલ ગએ ઔર ઈતને આદમી જલ કર મર ગએ. ઈસ

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रते पाक न पढा तहकीक वोल भद भप्त हो गया. (ابن سنی)

में जान का पतरा, माल की बरबादी और मकानों में आग लगने का अन्देश है, (नीज़) अपने माल में अपने हाथ से आग लगाना और फिर फुदा तआला की ना इरमानी का वबाल सर पर डालना है, फुदा كُرْبَعًا के लिये इस बेहूदा और इराम काम से बयो, अपने बय्यों और कराबत दारों को रोकी, जहां आवारा बय्ये येह भेल भेल रहे हों वहां तमाशा देभने के लिये भी न जाओ. (अज़न) (शभे बराअत की मुरव्वज) आतश बाजी का छोडना बिवा शक इसराफ़ और कुज़ूल पर्या है लिहाजा इस का ना जाईज व इराम होना और इसी तरह आतश बाजी का बनाना और बेयना परीदना सब शरअन मन्नूअ हैं. (इतावा अजमबिय्या, जि. 4, स. 52) मेरे आका आ'ला हजरत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रजा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरमाते हैं : आतश बाजी जिस तरह शादियों और शभे बराअत में राईज है बेशक इराम और पूरा जुर्म है के इस में तज़्यीअे माल (या'नी माल का जाअेअ करना) है.

(इतावा र-अबिय्या, जि. 23, स. 279)

## आतश बाजी की जघन सूरते

शभे बराअत में जो आतश बाजी छोडी जाती है उस का मकसद भेलकूद और तफ़रीह होता है लिहाजा येह गुनाह व इराम और जहन्म में ले जाने वाला काम है. अलबत्ता इस की बा'ज जाईज सूरते भी हैं जैसे के बारगाहे आ'ला हजरत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ में सुवाल हुवा : क्या इरमाते हैं उ-लमाअे दीन इस मस्अले में के आतश बाजी बनाना और छोडना इराम है या नही? अल जवाब : मन्नूअ व गुनाह है मगर जो सूरते भास्सा लहुवो लईव व तब्ज़ीर व इसराफ़ से पाली हो (या'नी उन मप्सूस सूरतों में जाईज है जो भेलकूद और कुज़ूल पर्या से पाली हो), जैसे अे'लाने डिवाल (या'नी यांद नज़र आने का अे'लान) या जंगल में या

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुर-दूर पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिल कर रहेगी. (مجمع الزوائد)

વક્તે હાજત શહર મેં ભી દફઝે જાનવરાને મૂઝી (યા'ની ઈઝા દેને વાલે જાનવરોં કો ભગાને કે લિયે) યા ખેત યા મેવે કે દરખ્તોં સે જાનવરોં (ઔર પરિન્દોં) કે ભગાને ઉડાને કો નાડિયાં, પટાખે, તૂમડિયાં છોડના.

(ફતાવા ૨-અવિચ્યા, જિ. 23, સ. 290)

तुज को शा'बाने मुअज़्ज़म का फुदाया वासिता

બપ્શ દે રબ્બે મુહમ્મદ તૂ મેરી હર ઈક ખતા

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

શબે બરાઅત મેં ઈબાદત કા જઝબા બઢાને, ઈસ મુકદ્દસ રાત મેં ખુદ કો આતશ બાઝી ઔર દીગર ગુનાહોં સે બચાને નીઝ અપને આપ કો બા કિરદાર મુસલ્માન બનાને કે લિયે તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક, દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ સે હર દમ વાબસ્તા રહિયે, હર માહ કમ અઝ કમ તીન દિન કે લિયે આશિકાને રસૂલ કે હમરાહ “મ-દની કાફિલે” મેં સુન્નતોં ભરા સફર ઈખ્તિયાર કીજિયે ઔર મ-દની ઈન્આમાત કે મુતાબિક ઝિન્દગી ગુઝારને કી કોશિશ ફરમાઈયે. આપ કી તરગીબ વ તહરીસ કે લિયે દો મ-દની બહારેં પેશ કી જાતી હેં :

### ❦ 1 ❧ શબે બરાઅત કે ઇજતિમાઅ સે મેરા દિલ ચોટ ખા ગયા

મર્કઝુલ ઔલિયા (લાહોર) કે એક ઈસ્લામી ભાઈ કી તહરીર કા લુબ્બે લુબાબ હે : તબ્લીગે કુરઆનો સુન્નત કી આલમગીર ગૈર સિયાસી તહરીક, દા'વતે ઈસ્લામી કે “મ-દની માહોલ” સે વાબસ્તા હોને સે પહલે مَعَاذَ اللهِ كَرَّمَ جَلَّتْ مِنْهُ السَّيِّئَاتُ ઝિયાદા તર બદ મઝહબોં કી સોહબત મેં રહને કે બહુત બડે ગુનાહ કે સાથ સાથ દીગર તરહ તરહ કે ગુનાહોં કી ખૌફનાક

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुज पर दुस्-द शरीफ़ न पढा उस ने जडा की. (عبدالرزاق)

दलदल में ली इंसा हुआ था, सद करोड अइसोस, के शबो रोज़ इल्में डिरामे टेभना, इड्डाशी के अडों के इरे लगाना मेरे नजदीक مَكَادُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ काबिले इफ़्र काम था. मेरी गुनाहों लरी जजं रसीदा शाम के इफ़्तिताम और नेकियों लरी सुब्हे बहारां के आगाज के अस्बाब यूं बने के अक इस्लामी लार्थ की इन्फ़िरादी कोशिश की ज-र-कत से मुजे “इन्जर वाल” में शबे बराअत के सिव्सिले में डोने वाले सुन्नतों लरे इजतिमाअ में शिकत की सआदत नसीब डो गइ. मुबल्लिगे दा’वते इस्लामी का बयान इस कदर पुरसोज़ और रिक्त अंगेज था के मैं अपने गुनाहों पर नदामत से पानी पानी डो गया, अल्लाह جَلَّوَجَلَّ की नाराजी का कुछ औसा भौफ़ तारी हुआ के मेरी आंभों से आंसूओं के धारे बड निकले. इजतिमाअ के इफ़्तिताम पर डमारे अलाके के “म-दनी काइला जिम्मेदार” इस्लामी लार्थ ने मुज से मुलाकात इरमाइ और मुजे तीन दिन के म-दनी काइले में सइर की तरगीब दी, यूंके हिल योट जा युका था लिहाजा मैं उन की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में म-दनी काइले का मुसाइर बन गया. म-दनी काइले के अन्दर आशिकाने रसूल की शक़तों लरी सोडभत में रह कर बे शुमार सुन्नतें सीजने की सआदत डसिल हुई. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने साबिका तमाम गुनाहों से तौबा कर ली. जब र-मजानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी हुई तो मैं ने आशिकाने रसूल के साथ आभिरी अ-शरे के अे’तिकाइ की सआदत डसिल की. उस अे’तिकाइ में सत्ताइसवीं शब अक फ़ुश नसीब इस्लामी लार्थ को الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ सरकारे डो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारत नसीब हुई, इस बात ने मेरे हिल में दा’वते इस्लामी की मडभत को मजीद 12 यांढ



करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुठ पर रोजे जुमुआ दुर-द शरीफ़ पढेगा में क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (جمع الجوامع)

लगा दिये और मैं मुकम्मल तौर पर दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हो गया.

आओ करने लगोगे बहुत नक काम, म-दनी माडोल में कर लो तुम अ'तिकाफ़  
 इठले रब से हो दीदारे सुल्ताने दी, म-दनी माडोल में कर लो तुम अ'तिकाफ़  
 शादमानी से जूभेगा कल्बे हर्जी,  
 म-दनी माडोल में कर लो तुम अ'तिकाफ़

(वसाईले बप्शिश (मुरम्मम), स. 645)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## ﴿2﴾ इल्मों का प्वार

आबुल मदीना (कराची) के अलाके “अडा बोर्ड” के अक ईस्लामी त्माई के बयान का फुलासा है के पहले पहल में मुआ-शरे का बिगडा हुवा नौ जवान था, रोजाना पाबन्दी के साथ भूख इल्में इरामे देपने के सबब महल्ले में “इल्मों का प्वार” के नाम से मशहूर हो गया था. मेरी तौबा का सबब येह बना के अक ईस्लामी त्माई की “ईन्डिरादी कोशिश” के नतीजे में “अज्जु ब्राउन्ड” (गुल बहार, आबुल मदीना) में तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते ईस्लामी की तरफ़ से होने वाले शबे बराअत के सुन्नतों तरे ईजतिमाअे पाक में शिकत की सआदत हासिल हो गई, वहां पर मैं ने “कब्र की पहली रात” के मौजूअ पर रुला देने वाला बयान सुना, भौंके फुदा كَلِّمْكَ से दिल् बेचैन हो गया, मैं ने पिछले गुनाहों से तौबा की और दा'वते ईस्लामी के म-दनी माडोल से वाबस्ता हो गया. हमारा सारा घराना मोडर्न था, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيَّ मेरी ईन्डिरादी कोशिश से मेरे पांय त्माई त्मी

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक छुवा और उस ने मुज पर दुरदे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड दिया. (طبرانی)

दा'वते ईस्लामी वाले बन गये और सब ने सरो पर ईमामा शरीफ़ का ताज सजा लिया और घर के अन्दर म-दनी माडोल बन गया, ता दमे तहरीर हल्का मुशा-वरत के भादिम की हैसियत से सुन्नतों की पिटमत कर रहा हूँ. मुझे सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काइलों में सफ़र का काफ़ी शौक है, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ यर माड पाबन्दी से तीन दिन आशिकाने रसूल के साथ म-दनी काइले में सफ़र करता हूँ.

यकीनन मुकदर का वोड है सिकन्दर जिसे धेर से मिल गया म-दनी माडोल

यहां सुन्नतें सीपने को मिलेंगी दिवायेगा पौफ़े पुदा म-दनी माडोल

अै भीमारे इस्यां तू आ जा यहां पर

गुनाहों की देगा दवा म-दनी माडोल

(वसाएले बफ़िश (मुरम्मम), स. 647, 648)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बयान को ईप्तिताम की तरफ़ लाते हुये सुन्नत की इजीलत और यन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूँ. ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे बजमे हिदायत, नोशअे बजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मडबबत की उस ने मुज से मडबबत की और जिस ने मुज से मडबबत की वोड जन्नत में मेरे साथ डोगा.

(ابن عَسْلَكِر ج ٩ ص ٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿ १ ﴾ **इरमाने मुस्तक** صَلَّيْنَا عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुर-दे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुर-दे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाईस है. (ابو يعلىٰ)

## “शा’जानुल मुयम्मम” के ग्यारह हुरइ की निस्मत से कख्रिस्तान की हाजिरी के 11 म-दनी कुल

- ﴿ 1 ﴾ नबिय्ये करीम, रउिकुर्रहीम صَلَّيْنَا عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने अजीम है : मैं ने तुम को जियारते कुभूर से मन्अ किया था, अब तुम कब्रों की जियारत करो के वोड दुन्या में बे रज्जती का सबाब है और आबिरत की याद दिलाती है. (سُنَنِ ابْنِ مَاجَهٗ ٢/٢٠٢ ح ١٠٧١)
- ﴿ 2 ﴾ (वलिय्युल्वाड के मजार शरीफ या) किसी भी मुसल्मान की कब्र की जियारत को जाना याडे तो मुस्तडब येड है के पडले अपने मकान पर (गैरे मकडड वक्त में) दो रकअत नइल पढे, हर रकअत में सू-रतुल इतिहा के बा’द अेक बार आ-यतुल कुसी और तीन बार सू-रतुल इश्वास पढे और उस नमाज का सवाब साडिबे कब्र को पडोंयाअे, अद्लाड तआला उस इत शुदा बन्दे की कब्र में नूर पैदा करेगा और ईस (सवाब पडोंयाने वाले) शप्स को बहुत जियादा सवाब अता इरमाअेगा. (فتاوى عالمگیری ج ٥ ص ٣٠٠)
- ﴿ 3 ﴾ मजार शरीफ या कब्र की जियारत के लिये जाते हुअे रास्ते में कुजूल बातों में मशगूल न डो. (أَيْضًا)
- ﴿ 4 ﴾ कख्रिस्तान में उस आम रास्ते से जाअे जहां माजी में कभी भी मुसल्मानों की कब्रें न थीं, जो रास्ता नया बना हुवा डो उस पर न यले. “रहुल मुडतार” में है : (कख्रिस्तान में कब्रें पाट कर) जो नया रास्ता निकाला गया डो उस पर यलना डराम है. (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ١ ص ١١٢)
- बडके नअे रास्ते का सिई गुमाने गालिब डो तब भी उस पर

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुर-द शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से क-जूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

यलना ना ज़ाईज व गुनाह है. (نَدْرِ مُخْتَار 3 ص 183)

﴿5﴾ कथ मज़ाराते औलिया पर ज़ाईरीन की सडूलत की षातिर मुसल्मानों की कब्रें भिस्मार कर के (या'नी तोड झोड कर) इर्श बना दिया गया है, जैसे इर्श पर लैटना, यलना, षडा होना, तिलावत और जिक्र अजकार के लिये बैठना वगैरा हराम है, दूर ही से इतिहा पढ लीजिये.

﴿2﴾ ज़ियारते कब्र मय्यित के मुवा-जहा में (या'नी येहरे के सामने) षडे हो कर हो और उस (या'नी कब्र वाले) की पाईती (या'नी कदमों) की तरफ़ से ज़ाअे, के उस की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आअे, के उसे सर उठा कर देखना षडे.

(इतावा र-अविथ्या मुषर्रज़, ज़ि. 9, स. 532)

﴿7﴾ कब्रिस्तान में ईस तरह षडे हों, के क़िबले की तरफ़ षीठ और कब्र वालों के येहरो की तरफ़ मुंह हो ईस के बा'द क़हिये :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلكُمْ أَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ  
तरजमा : अै कब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, अद्लाह उमारी और तुम्हारी मज़्फ़िरत इरमाअे, तुम हम से पडले आ गअे और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं. (فتاوى عالمگیری ج 5 ص 300)

﴿8﴾ ज़ो कब्रिस्तान में दाखिल हो कर येह कहे :  
اللَّهُمَّ رَبِّ الْأَجَادِ  
الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخْرَةِ الَّتِي خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِيَ بِكَ مُؤْمِنَةٌ  
तरजमा : अै ادْخُلْ عَلَيْهَا رَوْحًا مِنْ عِنْدِكَ وَسَلَامًا مِنِّي.

﴿۹﴾ **इरमाने मुस्तक** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दूरद पढो के तुमहारा दुरूद मुझ तक पडोयता है.  
(طبرانی)

अद्लाह ! (औ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा लडियों के रब ! जो दुन्या से धिमान की हालत में रुफ्सत हुअे तू उन पर अपनी रहमत और मेरा सलाम पडोया दे. तो लउरते सय्यिदुना आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) से ले कर उस वक्त तक जितने मोमिन झौत हुअे सभ उस (या'नी दुआ पढने वाले) के लिये दुआअे मगिदरत करेगे.

(مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ۱۰ ص ۱۵)

﴿9﴾ शईअे मुजरिमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने शईअत निशान है : जो शप्स कब्रिस्तान में दाभिल हुवा इर उस ने सू-रतुल इतिहा, सू-रतुल धिप्लास और सू-रतुतकासुर पढी इर येह दुआ मांगी : या अद्लाह ! में ने जो कुदु कुरआन पढा उस का सवाब इस कब्रिस्तान के मोमिन मुदौ और मोमिन औरतों को पडोया.तो वोह तमाम मोमिन कियामत के रोज उस (या'नी इसाले सवाब करने वाले) के सिइरिशी होंगे. (شَرْحُ الصُّنُورِ ص ۳۱) लदीसे पाक में है : “जो ग्यारह बार सू-रतुल धिप्लास पढ कर इस का सवाब मुदौ को पडोयाअे, तो मुदौ की गिनती के बराबर उसे (या'नी इसाले सवाब करने वाले को) सवाब मिलेगा.” (دُرِّمُخْتَارُ ج ۳ ص ۱۸۳)

﴿10﴾ कब्र के डीपर अगरभती न जलाई जाअे इस में सूअे अदब (या'नी बे अ-दबी) और बदइली है हां अगर (हाजिरीन को) भुशू (पडोयाने) के लिये (लगाना याहें तो) कब्र के पास भाली जगह हो वहां लगाअें के भुशू पडोयाना महबूब (या'नी पसन्दीदा) है. (मुलभसन इतावा र-जविथ्या मुपर्ज, जि. 9, स. 482, 525)

इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो लोग अपनी मजलिस से अल्हाड के जिक्र और नबी पर दुस्-द शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गये तो वोह बद्बुद्दार मुद्दरि से उठे. (شعب الايمان)

आ'ला उजरत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه ओक और जगह इरमाते हें :  
 "सहीह मुस्लिम शरीफ़" में उजरते अम्र बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से भरवी, उन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक्ते वफ़ात) अपने इरजन्द से इरमाया : "जब में मर जाउं तो मेरे साथ न कोई नौडा करने वाली जाये न आग जाये." (مُسْلِمٌ ص 70 حَدِيث 192)

﴿11﴾ कब्र पर यराग या मोमबत्ती वगैरा न रभे, हां रात में राह यलने वालों के लिये रोशनी मकसूद हो, तो कब्र के अेक जनिब जाली जमीन पर मोमबत्ती या यराग रभ सकते हें.

उजारों सुन्नतें सीपने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ दो कुतुब  
 (1) 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत डिस्सा 16 और  
 (2) 120 सफ़हात की किताब "सुन्नतें और आदाब" उदिय्यतन हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबियत का अेक बेहतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के म-दनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

येह रिसाला पढ लेने के भा'द सवाब की निखत से किसी को दे दीजिये

गमे मदीना, बकीअ, मज्फिरत और बे डिस्साब जन्नतुल इरदौस में आका के पडोस का तालिब



यकुम र-जबुल मुरज्जब 1436 सि.हि.  
 21-04-2015

﴿رَبِّهِمْ﴾ : صَلَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरूहे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (جمع الجوامع)

## माخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
فريدک پبلسنگ مرکز الادب والادب الامم	نزہہ القاری		قرآن مجید
مؤسسۃ الریان بیروت	القول البدیع	دار الفکر بیروت	تفسیر در منثور
دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتیۃ الطالبین	دار احیاء التراث العربی بیروت	تفسیر روح البیان
دار الکتب العلمیۃ بیروت	مکاشفۃ القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	صحیح بخاری
مرکز المسئمت برکات رضا الہند	شرح الصدور	دار ابن حزم بیروت	مسلم
دار ابن حزم بیروت	الطائف العارف	دار احیاء التراث العربی بیروت	سنن ابو داؤد
مکتبۃ المنار مکتبۃ المکتبۃ	فضائل الاوقات	دار الفکر بیروت	سنن ترمذی
دار المعرفۃ بیروت	روح البیان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سنن نسائی
دار المعرفۃ بیروت	رد المحتار	دار المعرفۃ بیروت	ابن ماجہ
دار الفکر بیروت	فتاویٰ عالمگیری	دار الفکر بیروت	مسند امام احمد
رضا فاؤنڈیشن مرکز الادب والادب الامم	فتاویٰ رضویہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مسند ابی یوسف
شعبہ برادر مرکز الادب والادب الامم	فتاویٰ رضویہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	شعب الایمان
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دار الفکر بیروت	مصنف ابن ابی شیبہ
کتبہ براہمہ کتب خانہ مرکز الادب والادب الامم	کلیات مکاتیب رضا	دار الکتب العلمیۃ بیروت	جامع الصغیر
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	اسلامی زندگی	دار الفکر بیروت	ابن مساکر
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش (مہرم)	دار الفکر بیروت	مراۃ

## येह रिसाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी गमी की तकरीबात, ईजतिमाआत, आ'रास और जुलसे मीलाह वगैरा में मक-क-अतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाईल और म-दनी इत्वाँ पर मुशतमिल पेम्फ्लेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाडकों को ब नित्यते सवाब तोडके में देने के लिये अपनी दुकानों पर त्मी रसाईल रबने का मा'मूल बनाईये, अफ्बार इरोशाँ या बर्य्यों के जरीअे अपने मडल्ले के घरों में डरबे तौकीक रिसाले या म-दनी इत्वाँ के पेम्फ्लेट डर माड पलोंया कर नेकी की द्वा'वत की धूमें मयाईये और भूब सवाब कमाईये.

﴿إِنَّ مَوْلَىٰ الْمُؤْمِنِينَ إِلهُ الرَّحْمٰنِ﴾ : मुज पर दुरद शरीफ पढो, अल्लाह तुम पर रक्षत भेजेगा. (अबु अदी)

इंहरिस

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
आशिडे दुरदो सलाम का मकाम	1	ईमामे अहले सुन्नत का पयाम	
आका ﴿صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ﴾ का महीना	2	तमाम मुसल्मानों के नाम	11
शा'बान के पांच हुरद की बहारें	2	पन्दरह शा'बान का रोजा	13
सहाबअे किराम का जजबा	3	इअदे की बात	14
मौजूदा मुसल्मानों का जजबा	4	सज्ज परया	14
नइल रोजों का पसन्दीदा महीना	4	मगरिब के बाद के छ <sup>०</sup> नवाइल	15
लोग ईस से गाइल हें	5	दुआअे निस्के शा'बानुल मुअज्जम	16
मरने वालों की इंहरिस		सगे महीना ﴿مَغْفِرَةٌ﴾ की	
बनाने का महीना	5	म-दनी'ईल्तिज्जअें	18
आका शा'बान के अकसर रोजे रपते थे	6	साल त्तर जदू से डिइजत	19
हदीसे पाक की शर्ह	6	शबे बराअत और कब्रों की जियारत	19
दा'वते ईस्लामी में रोजों की बहारें	6	आतश बाजी का मूजिद कौन	20
शा'बान के अकसर रोजे रपना		शबे बराअत की मुरव्वज	
सुन्नत है	7	आतश बाजी हराम है	20
बलाईयों वाली रातें	8	आतश बाजी की जईज सूरतें	21
नाजुक कैसले	8	शबे बराअत के ईजतिमाअ से	
ढेरों गुनाहगारों की मग्दिरत		मेरा हिल योट भा गया	22
छोती है मगर...	9	इिल्मों का प्वार	24
हजरते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ	9	कब्रिस्तान की डालिरी के	
महज्जम लोग	10	11 म-दनी इूल	26